Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 02, April-June 2025, pp. 110-112

भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय दलों का महत्वः एक विवेचन

अंजू कुमारी यादव*

सार

लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दल आवश्यक भूमिका निभाते है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में, राजनीतिक दल लोगों से जनादेश प्राप्त करके सरकार का निर्माण करते है। राजनीतिक दल व्यक्तियों का एक समूह होता है जो किसी विचारधारा पर सहमत होते है और सामूहिक भावना, नेतृत्व के आधार पर सत्ता पर अधिकार करते हुए सरकार बनाने के लिये प्रयासरत रहते है। राजनीतिक दल आमतौर पर परम्पराओं, विचारधारा, आपसी हितों, सामन्जस्य और मनोवैज्ञानिक झुकाव आदि के आधार पर एकजुट होते है। राजनीतिक दल जनता की मांग और अपेकक्षाओं को अभिव्यक्त करने के महत्वपूर्ण साधन रहे है। लोगों के मूल्यों, आदर्शों, मानदण्डों, आंकाक्षाओं को प्रतिनिधित्व के माध्यम से एकत्रित करते हुये चुनावी घोषणाओं के रूप में उजागर करने का प्रयास किया जाता है।

शब्दकोशः *राजनीतिकदल, सरकारें, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दल, लोकतंत्र बहुदलीय व्यवस्था, जनमत।*

प्रस्तावना

आधुनिक युग में अधिकांश लोकतांत्रिक देशों ने "प्रतिनिधि प्रणाली" को अपना लिया है। लोकतांत्रिक सरकार के स्वरुप जिसमें राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है और निर्वाचकों और निर्वाचित के मध्य एक कड़ी के रूप में कार्य करते है। अन्य पड़ोसी राज्यों की तुलना में कहा जा सकता है, कि भारत में लोकतंत्र सफल रहा है। यद्यपि आपतकाल ने लोकतांत्रिक प्रणाली को आद्यात पहुंचाया, लेकिन यह अस्थायी था और स्वतंत्रता के बाद भी 18 संसदीय और राज्यों में विधानसभाएं बनी रही। राजनीतिक दल आधुनिक लोकतांत्रिक सरकार का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन उनकी पहचान, कार्य, संगठन और सदस्यों में भिन्नता दिखाई देती है। किसी भी देश का निर्माण कई कारको से होता है जैसे उसकी राजनीतिक व्यवस्था संघीय है या संसदीय। भारतीय लोकतंत्र में दलीय प्रणाली भी अपनी विशिष्ट संरचना द्वारा आकार लेती है। स्वतंत्रता के बाद एक निर्वाचित प्रतिनिधि संसद भारत के संघ स्तर पर तथा राज्यों में विधानसभाओं की स्थापना की गई। संसदीय प्रणाली और लोकतंत्र को मजबूती देने के सम्बन्ध के कारको में भारतीय दलीय व्यवस्था की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। एक दल के प्रभुत्व के अन्त और गठबन्धन के उदय के साथ इस युग में राजनीतिक दलों की विखण्डन तेजी से हुआ जिससे देश में बहुदलीय प्रणाली लागू हुई।

भारत की विविधता एक महत्वपूर्ण विशेषता है जिसका प्रभाव दलीय प्रणाली और लोकतंत्र पर अधिक हुआ है। भारत में 4 अन्तरनिहित सामाजिक विविधताऐ है भाषा, जाति, धर्म, और क्षेत्र। कुछ क्षेत्रीय विविधताओं

---

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

के रूप में मौजूद है तो कुछ सामाजिक विविधताओं के रूप में। भारतीय दलीय प्रणली ने उपरोक्त संदर्भ में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के सदस्य में अपना विशिष्ट आकार ग्रहण कर लिया। राज्यों में क्षेत्रीय दलों की उपस्थिति का पता बहुत पहले से लगाया जा सकता है जो राष्ट्रीय व क्षेत्रीय राजनीति के साथ–साथ भारतीय लोकतंत्र को मजबूती देने वाले कारके रूप में अधिक महत्वपूर्ण स्थापित हुए।

क्षेत्रीय दलों का स्वरुप

क्षेत्रीय राजनीतिक दलों को उनकी विचारधारा, स्वरुप, कार्यों के आधार पर दो भागों में बांटा जा सकता है। उनके प्रभाव क्षेत्र के आधार पर किसी राज्य विशेष की चुनावी राजनीति में उनकी प्रमुख भागीदारी और दूसरा धर्म, भाषा, क्षेत्र के आधार पर निर्मित राज्यों के आन्दोलनों में उनकी भूमिका रही हो। जिनमें प्रमुख रूप से असम गण परिषद, तेलगुदशम पार्टी, द्रविड मुनेत्र कषगम, कांग्रेस जैसे राजनीतिक दलों को सम्मिलित किया जाता है। कुछ राजनीतिक दल ऐसे भी है जिनका अखिल भारतीय स्वरुप क्षेत्रीय दलों के रूप में ही बनकर रहा गया। जिनमें प्रमुख है–फॉरवर्ड ब्लॉक, रिवोल्यूशनरी पार्टी आदि। भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय दलों का महत्व स्वतंत्रता के साथ से ही रहा है। कुछ राज्यों में क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों के साथ मिलकर राज्यों की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका के साथ–साथ गांवों, दूरदराज के कस्बो में भी लोकतंत्र की लहर का पनपा रहे है।

क्षेत्रीय दलों कि विचारधारा के आधार पर कोई निश्चित विभाजन तो नही किया जा सकता क्योंकि इनमें से कुछ दल करिश्मावादी, व्यक्तित्व पर आधारित है। इनकी सम्पूर्ण विचारधारा व्यक्ति विशेष के इर्द–गिर्द–घूमती रहती है। विचारधारा से अधिक ये राजनीतिक दल अपना प्रभाव संस्कृति, भाषा, धर्म क्षेत्र, जैसी क्षेत्रवादी मानदण्डों पर आधारित क्षेत्र विशेष के इतिहास और क्षेत्रीय पहचान को आधार करते हुए नवीन राज्यों का निर्माण इन दलों के गठन का प्रमुख आधार है।

भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय दलों की भूमिका

भारती लोकतंत्र एक विविधता और बहुदलीय प्रणाली को अपनाये हुये है, जिसमें क्षेत्रीय दलों की भूमिका राष्ट्रीय दलों से कम नहीं आंकी जा सकती। देश की सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को देखते हुए, क्षेत्रीय दल लोकतंत्र को अधिक समावेशी और प्रतिनिधित्वात्मक बनाते है।

- **स्थानीय मुद्दों को उठाना :** क्षेत्रीय दल अपने–अपने राज्यों या क्षेत्रों की समस्याओं, मांगो, आंकाक्षाओं को प्रमुखता से उठाते है। इससे लोकतंत्र में स्थानीय स्तर की आवाज को राष्ट्रीय स्तर पर महत्व मिलता है।
- **संघीय ढांचे को मजबूती :** भारत में संघात्मक शासन व्यवस्था को अपनाया गया है क्षेत्रीय दल केन्द्र और राज्यों के मध्य सत्ता संतुलन बनाये रखने में मदद करते है और राज्यों के अधिकारों की रक्षा के साथ–साथ विकास के मार्ग पर अग्रसर होते है।
- **लोकतांत्रिक भागीदारी में वृद्धि :** क्षेत्रीय दल समाज के उन वर्गों को प्रतिनिधित्व देते है जो सामान्यतः राष्ट्रीय दलों में अनसुने एवं प्रतिनिधित्व विहित रह जाते है। क्षेत्रीय दल समाज के हर छोटे–छोटे वर्ग, समुदाय को साथ जोड़कर चलते है जिससे लोकतंत्र की जड़े और गहरी होती है।
- **गठबंधन की राजनीति में भूमिका :** 1990 के दशक के बाद से केन्द्र में एकदलीय सरकारों का युग समाप्त हो गया। क्षेत्रीय दल अब राष्ट्रीय और राज्य स्तर की गठबंधन सरकारों का हिस्सा बनते है और सरकार के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। सरकार के गठन के साथ ही क्षेत्रीय दल अपने क्षेत्र विशेष की मांगों को मनवाने में भी सफल रहते है जो अनन्त लोकतंत्र में जनता के विश्वास में वृद्धि का कारण बनता है।

- **संविधान में संघीय ढांचे को मजबूती :** क्षेत्रीय दल केन्द्र और राज्य के बीच संतुलन और सामन्जस्य बनाये रखने में मदद करते है जिससे भारत का संघीय ढाँचा मजबूत होता है।
- **राजनीतिक शिक्षा प्रदान करना :** राजनीतिक दल विशेषकर क्षेत्रीय दल जो किसी क्षेत्र विशेष से जुड़े होते है। जिनका निर्माण आमजन तक सरकार की नीतियों, निर्णयों को पहुंचाना होता है वह इस कार्य के साथ–साथ जनता को चुनावो, मतदान, घोषणा पत्रों योजनाओं, सरकार के कार्यों के बारे में अवगत कराते हुए राजनीतिक शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी करते है।

निष्कर्षात्मक

भारत जैसे विशाल और विविधापूर्ण देश में जनता की आशा और आंकाक्षाओं को पूरा करने के लिये राजनीतिक दलों का होना जरूरी है। क्षेत्रीय राजनीतिक दल लोगों के साथ जुड़े होते है और उनकी समस्याओं, मांगों के बारे में ज्यादा अच्छे से जानते है। क्षेत्रीय दलों का उद्भव भारतीय संघात्मक व्यवस्था के लिए एक सकारात्मक परिघटना है। भारत में लोकतंत्र को मजबूत करने के साथ–साथ क्षेत्रीय दलों ने समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। क्षेत्रीय दलों से कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय नेताओं का जन्म हुआ है जैसे लालू प्रसाद यादव, मुलायम सिंह, शरद पंवार, बाला साहब ठाकरे आदि। ये नेता ऐसे रहे जो समाज में पिछड़े लोगों की आवाज बनकर उभरे। भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय दल सिर्फ चुनाव जीतने की मशीन नही है, अपितु यह जनभावनाओं के प्रतिनिधि है। क्षेत्रीय दल लोकतंत्र को विकेन्द्रीकरण की दिशा में ले जाते है और विविधता को सम्मान देते है। अंततः भारतीय राजनीति और लोकतांत्रिक संवैधानिक व्यवस्था में क्षेत्रीय दलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। और भविष्य में भी रहने की पूरी सम्भावना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रजनी कोठारी "पॉलिटिक्स इन इंडिया" ओरियेन्ट ब्लैकस्वान, 1970
2. तेजिन्दर रिजनल पार्टीस इन नेशनल पॉलिटिक्स के.के. पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली, 2008, पृ. 249
3. एकम जिंगफिल्ड "वाई रिजनल पार्टीज" केम्ब्रीज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2016
4. रत्नेश कुमार मिश्र, "भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दल" रावत बुक प्रकाशन, 2011
5. जगदीप राठौड़, भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दल" इशिका पब्लिशिंग हाऊस, 2012
6. योजना, दिसम्बर, 2015
7. सागर साहनी, पंकज कुमार "भारतीय संघात्मक व्यवस्था में क्षेत्रीय दलों की भूमिका : वर्तमान परिदृश्य" International Journal of Humanitieis, 2024
8. नीतु गुप्ता "केन्द्र में गठबन्धन सरकारें व क्षेत्रीय दलों का परिवर्तित स्वरुप + एक विवेचन" International Journal of Humanitieis, 2024
9. Vitindia.org/Article/-

♦❒♦